केतु ग्रह का रत्न

लहसुनिया (cat's eye stone) केतु ग्रह का रत्न है और केतु ग्रह का प्रतिनिधित्व करता है। शुद्ध लहसुनिया रत्न धारण करने का परिणाम तीन वर्ष तक प्राप्त होते हैं। शुद्ध लहसुनिया रत्न के अभाव में केतु ग्रह के उपरत्न का भी प्रयोग कर सकते हैं जैसेः- कर्केतक, संघीय, श्येनाक्ष, गोदन्ती आदि।

लहसुनिया रत्न की सामान्य पहचान

लहसुनिया रत्न देखने में एक ओर से कांच की सी आभा वाला होता है और दूसरी ओर से पत्थर की तरह दिखाई देता है। लहसुनिया रत्न में एक ओर सफेद धारियां होती हैं, बिल्ली की आंखों की तरह दिखता है व हाथ में लेने पर वजनी प्रतीत होता है।

लहसुनिया रत्न की सामान्य परीक्षण विधि

लहसुनिया रत्न को अंधेरे में रखकर देखने पर बिल्ली की आंख की तरह दिखाई देता है, लहसुनिया रत्न अधिक आंच में देर तक रखने पर अपना रंग बदल लेता है और टूट जाता है। लहसुनिया रत्न कपड़े से रगड़ने पर और अधिक चमकदार हो जाता है। लहसुनिया रत्न लोहे की भारी चोट से धारियों की तरफ से टूट जाता है।

लहसुनिया रत्न धारण करने की विधि

लहसुनिया रत्न को पंच धातु (सोना, चांदी, तांबा, सीसा और लोहा) या त्रिधातु (चांदी, तांबा और सीसा) के मिश्रण में या चांदी की अंगूठी या लॉकेट में बनवाकर, उसकी प्राणप्रतिष्ठा करके या करवाकर किसी शुभ मुहूर्त में या शुक्ल पक्ष के बृहस्पतिवार के दिन या शनि की

होरा में या केतु ग्रह के नक्षत्र वाले दिन सूर्यास्त के बाद अनामिका अंगुली (ring finger) में धारण करना चाहिये।

लहसुनिया रत्न धारण करने के लाभ

जन्मपत्रिका में केतु ग्रह के स्वामित्व भाव, केतु ग्रह जिस भाव में स्थित हो, केतु ग्रह की दृष्टि भाव और केतु ग्रह की दशा आदि में केतु ग्रह के शुभ प्रभावों को बढ़ाने और अशुभ प्रभावों को कम करने में लहसुनिया रत्न सहायक होता है, साथ ही सरकारी कार्यों में सफलता, दुर्घटना आदि से बचाव, पित्तज व रक्त रोगों में सुधार, शत्रुओं से बचाव, सागर पार की यात्रा, रोगों से मुक्ति आदि में भी सहायक सिद्ध होता है।

लहसुनिया रत्न धारण करने के लिए निर्देश और सावधानियां

लहसुनिया रत्न के पूर्ण शुभ फल प्राप्त करने के लिए अंगूठी या लॉकेट का निचला भाग भी खुला होना चाहिए ताकि लहसुनिया रत्न आपके शरीर को छू सके। लहसुनिया रत्न धारण करने के बाद यदि संभव हो सके तो तामसिक भोजन का प्रयोग न करें, नही तो कम से कम बुधवार के दिन तामसिक भोजन का प्रयोग बिलकुल न करें, धैर्य रखें, क्रोध न करें, झूठ न बोलें और बुधवार के दिन यथा-शक्ति केतु ग्रह का मंत्र जप करें। **लहसुनिया रत्न धारण करने के बाद 27 दिन के अन्दर यदि आपको प्रतिकूलता का अनुभव हो तो तुरंत ज्योतिषीय सलाह लें।**